Bp – युहोन्ना के शिष्य यीशु का अनुसरण करते हैं युहोन्ना
१:३५-५१ | 1

– Save This Page as a PDF–

युहोन्ना के शिष्य यीशु का अनुसरण करते हैं युहोन्ना १:३५-५१

खोदाई: युहोन्ना १:३०-३१ के प्रकाश में, आपको क्या लगता है कि जॉन को कैसा महसूस हुआ होगा जब उसके शिष्यों ने उसे यीशु का अनुसरण करने के लिए छोड़ दिया था? योचनान के बारे में वह क्या कहता है? जॉन के शिष्यों को येशुआ का अनुसरण करने के लिए किस बात ने प्रेरित किया? यीशु का वर्णन करने के लिए इस फ़ाइल में कौन से शीर्षक का उपयोग किया गया है? उनका क्या मतलब है? फिलिप और एंड्रयू में क्या समानता थी? नथनेल किस प्रकार का व्यक्ति है? फिलिप के कथन पर विश्वास करना उसके लिए कठिन क्यों हो सकता है? मसीहा ने उन पाँच तालिमिडिमों को बुलाते समय किस सूत्र का उपयोग किया जिन्होंने प्रारंभ में उसका अनुसरण किया था?

प्रतिबिंबित: आप क्या ढूंढ रहे हैं? तुम्हारी ज़िन्दगी का लक्ष्य क्या है? आप वास्तव में जीवन से क्या पाने की कोशिश कर रहे हैं? यीशु का अनुसरण करने में आपका उद्देश्य क्या था? आपको उद्धारकर्ता पर भरोसा कैसे आया? परिस्थितियाँ क्या थीं? आप उसके बारे में कितना जानते थे? आपके जीवन में एंड्रयू कौन था?

समय के विवरण के बारे में युहोन्ना जितना अधिक सावधान कोई नहीं है। इन छंदों से शुरू करके २:११ तक वह हमें कदम दर कदम यीशु के सार्वजनिक जीवन के पहले महत्वपूर्ण सप्ताह की कहानी बताते हैं। पहले दिन की घटनाएँ युहोन्ना १:१९-२८ में हैं; दूसरे दिन की कथा १:२९-३४ है; तीसरा दिन १:३५-३९ में सामने आया है। तीन श्लोक १:४०-४२ चौथे दिन की कहानी बताते हैं; पाँचवें दिन की घटनाएँ १:४३-५१ में बताई गई हैं। छठा दिन किसी कारण से दर्ज नहीं किया गया है। और सप्ताह के सातवें दिन की घटनाएँ २:१-११ में बताई गई हैं

एक बार फिर हम युहोन्ना बैपटिस्ट को खुद से परे इशारा करते हुए देखते हैं। उन्होंने पहले ही अपने शिष्यों से उन्हें छोड़ने और उनके प्रकट होने के बाद इस नए और महान रब्बी के प्रति अपनी वफादारी स्थानांतरित करने के बारे में बात की होगी। बप्तिस्मा देनेबाला के शरीर में ईर्ष्यालु हड्डी नहीं थी। एक बार जब आप मुख्य आकर्षण बन गए तो वार्म-अप बैंड बनना बेहद मुश्किल है; हालाँकि, युहोन्ना अपने ईश्वर प्रदत्त मिशन को पूरा करने के लिए दृढ़ था। इसलिए जैसे ही येशुआ प्रकट हुआ, युहोन्ना ने अपने शिष्यों को उसके पास छोड़ने में संकोच नहीं किया। वे उनका आशीर्वाद लेकर चले गये।

इस घोषणा के साथ कि राज्य निकट था, यीशु ने अपने प्रेरितों को बुलाना जारी रखा। मसीह के जीवन पर इस टिप्पणी में, मैं प्रेरितों और शिष्यों के बीच अंतर करता हूँ। बारहों को प्रेरित, या टैल्मिडिम (हिब्रू) कहा जाएगा, और जो अन्य उस पर विश्वास करेंगे उन्हें शिष्य कहा जाएगा। हालाँकि यह सच है कि प्रेरित भी शिष्य थे, यह सच नहीं है कि सभी शिष्य प्रेरित थे।

बाइबल की आयतों के बीच का खाली स्थान प्रश्नों के लिए उपजाऊ भूमि है, और यहाँ पंक्तियों के बीच बहुत कुछ लिखा हुआ है। हमारे प्रभु ने अपने पहले छह प्रेरितों को बुलाया: ज़ेबेदी के पुत्र युहोन्ना, आंद्रिय, पतरस, फिलिप और नाथनेल। इस विवरण में ज़ेबेदी के पुत्र जेम्स का विशेष रूप से उल्लेख नहीं किया गया था, लेकिन वह स्पष्ट रूप से वहाँ था। हम इसे पंक्तियों के बीच में लिखा हुआ देख सकते हैं क्योंकि यीशु ने अपने भाई युहोन्ना के साथ घनिष्ठ संबंध विकसित किया था, और याकूब और युहोन्ना, वज्र के पुत्र (मरकुस ३:१७), अविभाज्य थे। शिष्यत्व की अवधारणा नई नहीं थी. किसी भी महत्वपूर्ण रब्बी के पास वफादार अनुयायी होंगे जिन्हें अनुसरण करने और सीखने दोनों की प्रतिबद्धता के लिए बुलाया जाएगा (इस प्रकार टैल्मिड शब्द (एकवचन, जिसका अर्थ है सीखने वाला)। इसमें केवल जानकारी देने से कहीं अधिक शामिल है, क्योंकि इसमें किसी के साथ घनिष्ठ व्यक्तिगत संबंध भी शामिल है। रब्बी.

टोरा पर टिप्पणी, तल्मूड में यह खूबसूरती से कहा गया है, जहां एक शिष्य को बुलाया जाता है: अपने घर को रब्बियों के लिए एक बैठक स्थान बनने दें, और अपने आप को उनके पैरों की धूल में ढक लें, और प्यास से उनके शब्दों को पियें (पिर्के एवोट) १:५). सबसे अच्छे टैल्मिडिम (बहुवचन) वे थे जो अपने रब्बी के इतने करीब रहते थे कि वे उनकी सलाह के हर विवरण को जान सकते थे। यह आज एक नई चुनौती होनी चाहिए क्योंकि हम अपने जीवन में येशुआ के आह्वान पर विचार करते हैं।

तीसरा दिन: अगले दिन जॉन बैपटिस्ट अपने दो शिष्यों, एंड्रयू और युहोन्ना, ज़ेबेदी के बेटे (मैथ्यू ४:२१a; मार्क १:१९a) के साथ फिर से वहां था, जो अंततः पुस्तक का मानव लेखक बन गया। युहोन्ना. उन दिनों लेखक के लिए अपने नाम का उल्लेख किए बिना स्वयं को दृश्य में शामिल करना एक सामान्य साहित्यिक युक्ति थी। उदाहरण के लिए, मरकुस ने खुद को गेथसमेन के बगीचे से भागने का जिक्र करते हुए लिखा था: एक युवक, जिसने केवल सनी का कपड़ा पहना हुआ था, येशुआ का पीछा कर रहा था। जब उन्होंने उसे पकड़ लिया, तो वह अपना वस्त्र छोड़कर नंगा भाग गया (मरकुस १४:५१-५२)। और खुद का नाम लिए बिना, जब्दी का पुत्र जॉन, खुद को उस [प्रेरित] के रूप में संदर्भित करेगा जिसे यीशु प्यार करता था (जॉन १३:२३)। जॉन ने तुरंत आंद्रिया (युहोन्ना १:४०) को अपने दो शिष्यों में से एक के रूप में पहचाना, लेकिन खुद का उल्लेख नहीं किया, जैसा कि उस समय लेखकों के लिए प्रथा थी।

जब बपतिस्मा देनेवाले यूहन्ना ने यीशु को
उधर से गुजरते देखा, तो उन दोनों से कहा, देखो, यह परमेश्वर का मेम्ना है। जब दो (जल्द ही होने वाले) प्रेरितों ने उसे यह कहते हुए सुना, तो वे यीशु के पीछे हो लिए (युहोन्ना १:३६-३७)। हो सकता है कि वे सीधे उनके पास आने में बहुत शर्मा रहे हों और सम्मानपूर्वक कुछ दूर तक पीछे चले आए हों। फिर येशुआ ने कुछ बिल्कुल विशिष्ट किया। यीशु ने पीछे मुड़कर उन्हें पीछे आते देखा और उनसे बात की (यूहन्ना १:३८a)। कहने का तात्पर्य यह है कि, वह उनसे आधे रास्ते में मिला। उन्होंने उनके लिए चीजें आसान कर दीं. उसने दरवाज़ा खोला ताकि वे अंदर आ सकें | यहां हमारे पास ईश्वरीय पहल का प्रतीक है।

अडोनाई हमेशा पहला कदम उठाता है। जब मानव मन खोजना शुरू करता है, और मानव हृदय लालसा करना शुरू करता है, तो प्रभु आधे से अधिक रास्ते पर हमसे मिलने आते हैं। योहोवः हमें तब तक खोजने और खोजने के लिए नहीं छोड़ता जब तक वह नहीं आता; वह हमसे मिलने के लिए बाहर जाता है। जैसा कि ऑगस्टीन ने कहा, “जब तक वह हमें पहले ही नहीं मिल जाता, हम ईश्वर की तलाश शुरू भी नहीं कर सकते थे।” जब हम एलोहिम के पास जाते हैं तो हम उसके पास नहीं जाते जो स्वयं को छुपाता है और हमसे दूरी रखता है; हम उसके पास जाते हैं जो हमारी प्रतीक्षा में खड़ा है, और जो पहल भी करता है। जैसा कि युहोन्ना ३:१६-१७ कहता है: क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नष्ट न हो। लेकिन अनन्त जीवन है (Ms देखें –बिसवासी की शाश्वत सुरक्षा)। क्योंकि परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में जगत पर दोष लगाने के लिये नहीं, परन्तु इसलिये भेजा कि जगत उसके द्वारा उद्धार करे।

तब यीशु ने उनसे जीवन का सबसे बुनियादी प्रश्न पूछना शुरू किया: आप क्या खोज रहे हैं (युहोन्ना १:३८b)? यह उनके समय में फ़िलिस्तीन के लिए एक बहुत ही प्रासंगिक प्रश्न था। क्या वे विधिवादी थे, जो फरीसियों और टोरा-शिक्षकों की तरह टोरा में केवल सूक्ष्म और समझने में कठिन विवरणों की तलाश में थे? जहाँ वे भौतिकवादी होते हैं, केवल आज के लिए जीते हैं क्योंकि मरने के बाद हमारे पास कुछ नहीं बचता, सदूकियों? क्या वे राष्ट्रवादी कट्टरपंथियों की तरह रोमन जुए को उखाड़ फेंकने के लिए एक सैन्य कमांडर की तलाश कर रहे थे? या क्या वे प्रार्थना करने वाले विनम्र व्यक्ति थे जो प्रभु और उसकी इच्छा की तलाश में थे? या क्या वे केवल

हैरान, भ्रमित पापी लोग थे जो परमेश्वर से क्षमा की तलाश में थे? हो सकता है कि आज हम स्वयं से भी यही प्रश्न पूछें!

उन्होंने कहा: रब्बी (जिसका अर्थ है “शिक्षक”), आप कहाँ रह रहे हैं (युहोन्ना १:३८c)? यहूदी दुनिया में, यह प्रश्न वह साधन था जिसके द्वारा एक तल्मिड खुद को रब्बी की शिक्षा के प्रति समर्पित कर देता था। यदि रब्बी अनिवार्य रूप से कहता है कि यह उसकी चिंता का विषय नहीं है, तो उस व्यक्ति को एक टैल्मिड के रूप में खारिज कर दिया जाएगा। लेकिन इसका विपरीत भी सच था. यदि रब्बी ने कहा, “आओ और देखो,” तो उस व्यक्ति को उसके अनुयायी के रूप में स्वीकार किया जाएगा। यीशु ने उत्तर दिया, आओ और देखो।

इसलिये उन्होंने जाकर देखा कि वह कहाँ रहता है, और उन्होंने वह दिन उसके साथ बिताया। दोपहर के लगभग चार बज रहे थे (युहोन्ना १:३८)। यह जॉन के लिए बहुत महत्वपूर्ण था और उसने सटीक समय लिख लिया। कोई केवल उस बातचीत की कल्पना कर सकता है जो उस दोपहर और शाम को हुई थी जब आंद्रिया और युहोन्ना ने गलील के रब्बी को धर्मग्रंथों पर व्याख्या करते हुए सुना था। उसके पुनरुत्थान (लूका २४:१३-३२) के बाद एम्मॉस की ओर जाने वाले मार्ग पर उन दोनों की तरह, उन्होंने जो कुछ सुना उससे मोहित हो गए। हे यीशु के साथ बात करते हुए दिन बिताना!

यह जानना महत्वपूर्ण है कि प्रभु ने यरूशलेम के कई मदरसों से रब्बियों को बुलाना शुरू नहीं किया था। इसके बजाय, येशुआ ने गलील सागर के आसपास मेहनत करने वाले साधारण मछुआरों को बुलाया। हालाँकि, वे अज्ञानी नहीं थे क्योंकि निस्संदेह उन्हें उस समय बड़े होने के लिए अनिवार्य प्रशिक्षण प्राप्त हुआ था। फिर भी, कई लोग आश्चर्यचकित हैं कि कुछ प्रेरित आम लोग थे।

चौथा दिन (यूहन्ना १:४०-४२): शमौन पतरस का भाई अन्द्रियास उन दो में से एक था, जिन्होंने यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने जो कहा था उसे सुना था और जिसने यीशु का अनुसरण किया था (युहोन्ना १:४०)। हमारे उद्धारकर्ता ने पिछले दिन उससे जो कहा था, उससे एंड्रयू इतना प्रभावित हुआ कि उसने अगली सुबह सबसे पहले अपने भाई साइमन को ढूंढा और उससे कहा, “हमें मसीहा, यानी मसीह मिल गया है” (योचनान १ :४१). यह स्पष्ट था कि अन्द्रियास अपने करिश्माई भाई पीटर की छाया में रहता था। लोग शायद नहीं जानते होंगे कि एंड्रयू कौन था, लेकिन हर कोई पीटर को जानता था, और जब उन्होंने अन्द्रियास के बारे में बात की तो उन्होंने उसे पीटर के भाई के रूप में वर्णित किया। एंड्रयू टैल्मिडिम के आंतरिक सर्कल में से एक नहीं था। जब येशुआ ने जाइरस की बेटी को ठीक किया, जब हेर्मोन पर्वत पर उसका रूपांतर हुआ, जब वह गेथसमेन की पीड़ा से गुज़रा, तो यह पतरस, याकूब और अन्द्रियास थे, जिन्हें परमेश्वर का पुत्र अपने साथ ले गया।

अन्द्रियास के लिए पतरास को नाराज़ करना बहुत आसान होता। क्या वह पहले दो

प्रेरितों में से एक नहीं था जिन्होंने कभी यीशु का अनुसरण किया था? क्या पतरस की यीशु से मुलाकात उसके प्रति उत्तरदायी नहीं थी? क्या उसने यथोचित रूप से बारह में अग्रणी स्थान की आशा नहीं की होगी? लेकिन ये सब अन्द्रियास को कभी भी नहीं सूझा। वह पीछे खड़े होकर और अपने भाई को सुर्खियों में आने से काफी संतुष्ट था। प्राथमिकता, स्थान और सम्मान के मामले अन्द्रियास के लिए कोई मायने नहीं रखते थे। जो कुछ मायने रखता था वह येशु के साथ रहना और यथासंभव उसकी सेवा करना था।

अत: अन्द्रियास शमौन को यीशु के पास ले आया (युहोन्ना १:४२a)। यह एक सामान्य विषय बन जाएगा, क्योंकि हर बार जब हम अन्द्रियास को देखते हैं, तो वह किसी को उद्धारकर्ता के पास ला रहा है। गॉस्पेल में केवल तीन बार ऐसा हुआ है जब एंड्रयू को केंद्र मंच पर लाया गया है। सबसे पहले, यहां वह घटना है, जहां वह साइमन को येशुआ के पास लाया था। दूसरा, ५००० लोगों को खाना खिलाना है जब वह एक लड़के को पाँच जौ की रोटियाँ और दो छोटी मछलियों के साथ प्रभु के पास लाया (यूहन्ना ६:८-९)। और तीसरा, वह पूछताछ करने वाले यूनानियों को यीशु की उपस्थिति में लाया (यूहन्ना १२:२२)। दूसरों को मेशियाच में लाना अन्द्रियास के लिए सबसे बड़ी खुशी थी।

यीशु ने पतरस की ओर देखा। देखा के लिए ग्रीक शब्द एम्बलपीन है। यह एक संकेंद्रित, आशयित दृष्टि का वर्णन करता है जो न केवल देखती है सतही बातें, लेकिन वही जो इंसान का दिल पढ़ ले। और यहोवा ने कहा, तू यूहन्ना का पुत्र शमौन है। आपको सेफस कहा जाएगा, जिसका अरामी भाषा से अनुवाद पीटर है (यूहन्ना १:४२b)। शिमोन हिब्रू नाम था जिसे ग्रीक में पेट्रोस के नाम से भी जाना जाता था। पतरास या पेट्रोस एक पुल्लिंग संज्ञा है और इसका अर्थ है छोटा पत्थर या कंकड़।

पाँचवाँ दिन (युहोन्ना १:४३-५१): अगले दिन, अपने घर के मेहमानों को अलविदा कहने के बाद, यीशु ने गलील के माध्यम से उत्तर में एक शिक्षण अभियान के लिए निकलने का फैसला किया। फिलिप नाम का एक और संभावित शिष्य यहूदिया में रहता था, शायद येरुशलायिम से सात मील दूर एम्मॉस के छोटे से शहर में अपने विस्तारित परिवार के साथ। यीशु जानते थे कि वह गलील सागर के उत्तरी तट पर मछली पकड़ने वाले एक गाँव बेथसैदा से है, जिसे हाल ही में सीज़र ऑगस्टस की बेटी के सम्मान में एक शहर में बनाया गया था। फिलिप, अन्द्रियास और पतरस की तरह, बेथसैदा शहर से था, जो कफरनहूम के करीब था (यूहन्ना १:४४)।

फिलिप को खोजने पर, येशुआ ने उसे एक रब्बी का निमंत्रण देते हुए कहा: मेरे पीछे आओ (युहोन्ना १:४३)। वर्तमान काल की क्रिया में निरंतर बल होता है, अनुसरण करते रहें। तो इस अभिव्यक्ति को एक स्थायी प्रेरित होने के आह्वान के रूप में समझा जाएगा। यह न केवल रब्बियों की प्रथा थी, बल्कि इसे सबसे पवित्र कर्तव्यों में से एक माना जाता था, एक गुरु के लिए अपने चारों ओर टैल्मिडिम का एक घेरा इकट्ठा करना। फिलिप निडर था और उसने तुरंत उसका पीछा किया। जिस सहजता से उन्होंने

विश्वास किया वह उल्लेखनीय है। मानवीय दृष्टि से, कोई भी फिलिप को येशुआ के पास नहीं लाया था। वह शिमोन की तरह था, एक धर्मी और भक्त व्यक्ति जो इस्राएल को सांत्वना देने के लिए प्रभु की प्रतीक्षा करता था (लूका २:२५a)। वह तैयार था. वह आशावान था. उसका दिल तैयार था. और उसने ख़ुशी से, बिना किसी हिचकिचाहट के, लंबे समय से वादा किए गए मेशियाक के रूप में यीशु को प्राप्त किया। कोई अनिच्छा नहीं. कोई अविश्वास नहीं. उसके लिए यह मायने नहीं रखता था कि येशुआ किस शहर में पला- बढ़ा है। उसे तुरंत पता चल गया कि वह अपनी खोज के अंत पर आ गया है।

यह स्पष्ट रूप से फिलिप के चरित्र से बाहर था, और इससे पता चलता है कि पवित्र आत्मा ने उसके हृदय को किस हद तक तैयार किया था। उनकी स्वाभाविक प्रवृत्ति शायद पीछे हटने, संदेह करने, सवाल पूछने और थोड़ी देर इंतजार करने की रही होगी (देखें Fn – येशु ५००० लोगो को खिलाये)।

हमें इस बात का कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया गया है कि यीशु फिलिप्पुस को कैसे जानते थे। यह भी नहीं कहा गया है कि उसने उसे कहाँ पाया या फिलिप बैपटिस्ट का शिष्य था, हालाँकि ऐसा लगता है। इसलिए भगवान ने इस बिल्कुल सामान्य व्यक्ति को ढूंढने और उसे तेजी से बढ़ते टैल्मिडिम में शामिल करने के लिए अपने रास्ते से हट गए। प्रेरितों में से कुछ निस्संदेह महान योग्यता वाले व्यक्ति थे, लेकिन फिलिप हमें इस तथ्य पर विचार करने के लिए मजबूर करता है कि अन्य बहुत ही सामान्य लोग थे। ऐसे अनुयायियों के लिए मसीहा का उपयोग था। यह भी उल्लेखनीय है कि उनके उपचारों की तरह, परमेश्वर ने जिस तरह से अपने चमत्कार किए या उन्हें टैल्मिडिम कहा, उसका कोई सूत्र नहीं था।

फिलिप, अन्द्रियास की तरह, खुशखबरी को अपने तक नहीं रख सका। इसलिए फिलिप ने नथानिएल को पाया और उससे कहा, “हमें वह मिल गया है जिसके बारे में मूसा ने टोरा में लिखा था, और जिसके बारे में भविष्यवक्ताओं ने भी लिखा था – नासरत का यीशु, जो यूसुफ के घराने का सदस्य था” (युहोन्ना १:४५)। बहुवचन से हमें पता चलता है कि फिलिप ने पहले ही खुद को टैल्मिडिम के साथ पहचान लिया था।

“नाज़रेथ! क्या वहां से कुछ अच्छा आ सकता है?” नाथनेल ने पूछा (यूहन्ना १:४६)। गैलिलियों द्वारा नाज़रीन के प्रति अपमानजनक दृष्टिकोण पर ध्यान दें। नाज़रेथ को एक पिछड़ा हिक शहर माना जाता था, जो सेफ़ोरिस से ज्यादा दूर नहीं था, जिसमें रोमन सैनिकों की एक चौकी रहती थी। यह विशाल यिज्रेल घाटी की ओर देखने वाले पहाड़ों में एक हल्के अवसाद में स्थित था। इससे यह क्षेत्र पर नजर रखने के लिए सैनिकों के लिए एक आदर्श स्थान बन गया। लेकिन जब आपको ऊबे हुए सैनिकों से भरा शहर मिलेगा, तो आपको भ्रष्टाचार और अनैतिकता के लिए उपजाऊ जमीन मिलेगी। परिणामस्वरूप, नटज़ारेथ के यहूदियों ने पतन के लिए एक प्रतिष्ठा प्राप्त की जो कि पौराणिक बन गई, शायद उन अन्यजातियों के साथ उनके नियमित संपर्क और उस समय के सैन्य पुरुषों की भ्रष्ट आदतों के कारण। आज, यह कहने जैसा होगा, “परमेश्वर का

पुत्र सिन सिटी से आता है।” यह एक ऐसी प्रतिष्ठा थी जिसके नाज़रीन हकदार नहीं थे, लेकिन इज़राइल के धार्मिक दिमाग के लिए, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। दिखावे का मतलब सब कुछ है।

फिलिप ने नथनेल के साथ बहस करने का प्रयास नहीं किया। लोगों को स्वर्ग के राज्य में तर्क नहीं दिया जाता है। दरअसल, बहसें आम तौर पर फायदे की बजाय नुकसान ज्यादा पहुंचाती हैं। किसी को मसीह की वास्तविकता के बारे में आश्वस्त करने का एकमात्र तरीका उसे मसीह से रूबरू कराना है। कुल मिलाकर यह कहना सही है कि यह तर्क-वितर्क या दार्शनिक उपदेश और शिक्षा नहीं है जिसने मसीहा को हारी हुई जीत दिलाई है। यह क्रॉस की कहानी की प्रस्तुति है। फिलिप बुद्धिमान था. उन्होंने बहस नहीं की. उन्होंने इतना ही कहाः आकर देख लो।

नैथनेल का प्रश्न दो हज़ार साल बाद भी अभी भी बना हुआ है। . . क्या नाज़ारेथ से कुछ अच्छा आ सकता है? और फिलिप का उत्तर आज भी उतना ही प्रासंगिक है: आओ और देखो।

आइए और बदली हुई जिंदगियों को देखिए। . .

शराबी अब शांत हो गया है,

जो क्रोधित थे वे अब प्रसन्न हैं,

शर्मिन्दा लोगों को अब माफ कर दिया गया है,

शादियाँ फिर से बनाई गईं, अनाथों को गले लगाया गया,

कैद ने प्रेरित किया। . .

आओ और देखो परमेश्वर के छिदे हुए हाथ को सबसे सामान्य हृदय को छूते हुए, झुर्रीदार चेहरे से आंसू पोंछो, और क्षमा करो सबसे घृणित पाप है.

आओ और देखो। वह किसी साधक से नहीं बचता। वह किसी भी जांच को नजरअंदाज नहीं करता। वह किसी खोज से नहीं डरता।

जब यीशु ने नतनएल को आते देखा, तो उसके विषय में कहा, सचमुच एक इस्राएली है, जिस में कोई छल नहीं है (यूहन्ना १:४७)। यीशु को पता था कि नाथनेल उत्पत्ति २८ पर ध्यान कर रहा था जहाँ याकूब अपने चाचा लाबान के साथ रहने के लिए बेर्शेबा में रुका था। अब यदि कोई इस्राएली था जिस में बहुत अधिक छल था, तो वह लाबान था।

“तुम मुझे कैसे जानते हो?” नाथनेल ने पूछा (योचनन १:४८)। उन दिनों, हर किसी के लिए पवित्रशास्त्र की एक प्रति पाना असंभव था। इसलिए वे इसे याद करने और फिर उस

पर मनन करने में बहुत समय बिताते हैं। रब्बियों ने सिखाया कि यदि आप धर्मग्रंथों पर मनन करना चाहते हैं और ईश्वर से आशीर्वाद प्राप्त करना चाहते हैं, तो ऐसा करने के लिए सबसे अच्छी जगह अंजीर के पेड़ के नीचे है। इसे एक विशेष दर्जा प्राप्त था, और परिणामस्वरूप, कुछ रब्बी अंजीर के पेड़ के नीचे भी पढ़ाते थे। तानाख पर यहूदी टिप्पणियों में यहां तक कहा गया है कि यदि कोई व्यक्ति अंजीर के पेड़ के नीचे ध्यान करेगा तो वह धर्मग्रंथों को बेहतर ढंग से समझ पाएगा।

यीशु ने उत्तर दिया, फिलिप्पुस के बुलाने से पहिले जब तुम अंजीर के पेड़ के नीचे थे, तब मैं ने तुम्हें देखा था। लेकिन इस बार अपने जीवन में (अपने जन्म के समय के विपरीत), यीशु सर्वज्ञ थे और सब कुछ जानते थे। लेकिन नथनेल उतनी ही आसानी से मंदिर में ध्यान कर रहा होगा या कुछ और कर रहा होगा। नटानेल की प्रतिक्रिया क्या थी?

तब नतनएल ने कहा, “हे रब्बी, तू परमेश्वर का पुत्र है; तू इस्राएल का राजा है” (यूहन्ना १:४९)। ये बहुत ही अजीब प्रतिक्रिया है. यदि कोई कहता है, “मैंने तुम्हें पिछले शब्बात में मंदिर में, या पिछले रविवार को चर्च में देखा था,” तो सामान्य प्रतिक्रिया यह नहीं होगी: आप ईश्वर के पुत्र हैं। उस प्रतिक्रिया की गारंटी देने के लिए मंदिर या चर्च में होने में कुछ भी असामान्य नहीं होगा। यह अपेक्षित होगा. लेकिन येशुआ को न केवल यह पता था कि नतानेल अंजीर के पेड़ के नीचे ध्यान कर रहा था, बल्कि वह उस अध्याय को भी जानता था जिस पर वह ध्यान कर रहा था!

यीशु ने कहा: तुम विश्वास करते हो क्योंकि मैंने तुमसे कहा था कि मैंने तुम्हें अंजीर के पेड़ के नीचे देखा था। तुम उससे भी बड़ी चीज़ें देखोगे। फिर उन्होंने आगे कहा: मैं तुमसे सच कहता हूं, तुम (दोनों उदाहरणों में ग्रीक बहुवचन है) “स्वर्ग को खुला हुआ, और परमेश्वर के स्वर्गदूतों को मनुष्य के पुत्र पर चढ़ते और उतरते हुए देखोगे” (यूहन्ना १:५०-५१) . यह बेथेल में था कि याकूब रात बिताने के लिए रुका और उसने एक सपना देखा जिसमें उसने पृथ्वी पर एक सीढ़ी टिकी हुई देखी, जिसका शीर्ष स्वर्ग तक पहुंच रहा था, और भगवान के कोण उस पर चढ़ते और उतरते थे (उत्पत्ति २८:१२)। और न केवल येशुआ को ठीक-ठीक पता था कि नाथनेल किस अध्याय पर ध्यान कर रहा था, यीशु ने सीढ़ी होने का भी दावा किया, जो पृथ्वी से स्वर्ग तक जाने का एकमात्र साधन है। क्योंकि परमेश्वर एक है, और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच एक ही मध्यस्थ है, अर्थात् यीशु मसीहा (प्रथम तीमुथियुस २:५)।

परमेश्वर की आत्मा पहले पाँच तालिमिडिमों के हृदयों में कार्य कर रही थी। और भी होंगे. लेकिन इसके बाद, यीशु निजी तौर पर अपना पहला चमत्कार करेगा ताकि उसके प्रेरित उस पर विश्वास करें।